EDUCATIONAL Psychology

B.A. (Hons) Part-III
Paper VI Group (B)
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of Psy.
D. K. College, Dumraon
VKSU, Ara

RANKING-METHOD

शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षार्थियों (बालकों) की शीलगुणों को मापने के लिये कई तरह की विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। कोटि निर्धारण विधि (Ranking Method) छात्रों की शीलगुणों की मापने में इस्तेमाल की जानेवाली एक प्रमुख विधि है। यह एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा छात्रों (शिक्षार्थियों की आत्मनिष्ठ (Subjective) शीलगुणों को मापा जाता है।

कोटि (Ranking) का अर्थ श्रेणीकरण या श्रेणीबद्ध करना होता है। इसमें छात्रों की शीलगुणों को ऊपर से नीचे की तरफ श्रेणीबद्ध किया जाता है। ध्यातव्य हो कि इसका प्रयोग छात्रों की छोटी सं० पर करना उचित होता है। कोटी विधि को परिभाषित करते हुए रिली एवं लेविस ने कहा है,

" कोटि विधि का प्रयोग छात्रों की आत्मनिष्ठ शीलगुणों को जैसे ईमानदारी, नैतिकता एवं चारित्रिक शीलगुणों आदि को मापने के लिये किया जाता है।"

ध्यान देनेवाली बात यह है कि इस विधि से शीलगुणों को मापते समय उच्चकोटिक की शीलगुणों को ऊपर रखते हैं एवं निम्नकोटि के शीलगुणों को क्रमशः नीचे रखा जाता है। यानि इस ~~स्केल~~ स्केल में शीलगुणों को ऊपर से नीचे की तरफ रखा जाता है। जैसे मानलें शिक्षक किसी बालक

के Subjective traits को यदि हम मापना चाहेंगे तो उसे श्रेणीबद्ध करते समय - 1, 2, 3 . . . . . 10 के अनुसार श्रेणी बद्ध किया जायेगा। उस स्केल पर अधिकतम ईमानदारी दिखाने वाले के श्रेणी (1) में रखेंगे और उसके बाद उससे कम ईमानदारी और अन्त में सबसे कम वाला सबसे नीचे रहेगा। Spearman Rank differences technique या Kendal ranking Method का प्रयोग कर सहसम्बन्ध ज्ञात कर लेंगे। जैसे मान लें हम दस (10) बालकों के व्यक्तित्व के दो शीलगुणों उत्तरदायित्व एवं समयनिष्ठता (Punctuality) को मापना है, तो 1, 2, 3, - - - - - 10 को का इस स्केल पर कोटिबद्ध कर लेंगे उसी तरह दोनों Traits के लिये दो श्रेणीकरण बना लेंगे। एक सेट पर 1-10 तक उत्तरदायित्व को और दूसरे पर Punctuality पर रखेंगे इसके बाद दोनों सेट्स के शीलगुणों का Statistical Analysis स्पीयरमैन कोटि अंतर विधि या केंडिल कोटि अंतर विधि का प्रयोग सह-संबन्ध ज्ञात कर लेंगे। यदि दसों छात्रों के दोनों Traits का Co-relation 0.88 आता है तो मान लिया जायेगा कि दोनों में Positive Corelation है। यानि उत्तरदायित्व बढ़ने से समयनिष्ठता भी बढ़ जाती है।

गुण या विशेषतायें :- इस विधि की कुछ अपनी गुण है जो निम्नलिखित है :-

(1) गहनतम अध्ययन :- इस विधि का एक प्रमुख गुण यह है कि इसके द्वारा बालकों के व्यक्तित्व का गहनतम अध्ययन हो जाता है।

(2) यह ऐसी विधि है जिसमें केन्द्रीय प्रवृत्ति के दोषों, कठोरता के दोषों तथा उदारता के दोषों की कोई गुंजाइश नहीं है। क्योंकि बालकों के Traits को उत्कृष्ट एवं निम्नकोटि में श्रेणीबद्ध किया जाता है। इसी तरह कुछ Traits को मध्य श्रेणी में रखा जाता है

(3) इसकी तीसरी विशेषता यह है कि इसके माध्यम से शिक्षक प्रत्येक छात्र को एक दूसरे से विभेदित करते हुए श्रेणीबद्ध करता है। अतः बालकों में सापेक्ष अन्तर को करना आसान है, जिससे वास्तविक रूप से

सही-सही निष्कर्ष पर पहुँचना संभव हो पाता है।

दोष - इन गुणों के बावजूद इसकी कुछ सीमाएँ हैं:-

(1.) कोटि विधि की सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह छोटे सैम्पल पर ही कारगर है; जब सैम्पल बड़ा हो जाता है तो इसकी विश्वसनीयता संदेहास्पद हो जाती है।

(2.) इस विधि की दूसरी बड़ी सीमा यह है कि इससे शिक्षार्थियों की शीलगुणों की आपसी भिन्नता का पता नहीं चल पाता है। क्योंकि यदि बुद्धि लब्धि में भिन्न-भिन्न बालकों का मात्र एक-एक अंक का अंतर आता है तो उसको कोटि विधि में बदलने पर अंतर अधिक हो जाता है। अतः शीलगुणों की भिन्नता का वास्तविक पता नहीं चल पाता है।

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ सीमाओं के बावजूद शिक्षा मनोविज्ञान में Ranking Method का काफी महत्व है क्योंकि बालकों (शिक्षार्थियों) की आत्मगत शीलगुणों की अध्ययन में इसका इस्तेमाल काफी किया जाता है।

[signature]